



# इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

आपकी सफलता का प्रवेश द्वार.....

AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान



## सामान्य अध्ययन / GENERAL STUDIES

निर्धारित समय: 3 hours  
Time Allowed :

अधिकतम अंक 300  
Maximum Marks

नाम. Name : Ke, Akanksha Goshwal

मोबाईल नं. Mobile No : 99 03837099

ई-मेल पता. E-mail Address akankshgoshwal44@gmail.com

रोल नं. Roll No : दिनांक (Date) 9/01/2021

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam) हिन्दी  
विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature) Akanksha

### प्रश्न - पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें :

- इसमें 3 प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
- प्रश्नों में शब्द सामा, जहा विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
- उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

### Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

- There are 3 question and all the questions are compulsory.
- The Number of marks carried by a question/part is indicated against it.
- Answer must be written in the medium authorized in the admission certificate which must be started clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) booklet in the space provide.
- No marks will be given for answer written in a medium other than the authorized one.
- Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the answer book must be clearly struck off.

कुल प्राप्त अंक (Total Marks Obtained)

टिप्पणी (Remarks)

1	A	तापीय प्रतिक्रमण से तापमान में कमी के स्थान पर वृद्धि हो। यह सामान्यतः जलवायु परिवर्तन का प्रभाव है।
	B	जब किसी क्षेत्र विशेष में कृषि के अलावा पशुपालन, चारागाह जैसी क्रियाएं भी संयोजित हो, मिश्रित कृषि कहते हैं। - लाभ: उत्पादन वृद्धि, उर्वरता वृद्धि, किसान आय वृद्धि
	C	आपदा प्रबंधन से संबंधित शब्दावली है। आपदा प्रचलित उद्योगों के कदम हैं जिसमें स्वास्थ्य, श्रम, संबंधी एवं आपदा पूर्व स्थिति कोण का प्रयास किया जाता है।
	D	
	E	जैट स्ट्रीम पवने क्षोभमण्डल से समताप मंडल में प्रवाहित सामान्यतः दक्षिण पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित। प्रकार: उपोष्ण कटिबंधीय पड़ोसी जैट स्ट्रीम आदि।
	F	रिक्त अपरदन की अंतिम अवस्था है। वर्षाजल तेज बहाव से नाकियां चूड़ी एवं गहरी हो जाती हैं। - कृषि योग्य भूमि नहीं रहती है।

प्रश्न  
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

यह एक प्रकार की कृषि संरचना है

एकितों से तात्पर्य - पृथ्वी तक पहुँचने वाले तापमान की  
कुछ मात्रा वातावरण में परिवर्तित कर देना।

चम्बक नदी पर अवस्थित बाँध है  
प्रमुख जिले - मंडसौर, नीमच आदि  
मैण्डोल में सिंचित व नदी संबंधन हेतु कृषि आकर यत्र।

भ्रंश धारियों के बीच स्थित पर्वत भ्रंशोत्थ पर्वत  
कहलाते हैं जो अपेक्षाकृत ऊँचे होते हैं  
उदा - विन्ध्याचल पर्वत

ड्वारनपुर के अन्तर्गत नदियाँ डेल्टा का निर्माण नहीं  
करती हैं। प्रमुख नदियाँ - नर्मदा, ताप्ती आदि।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

2

M विभाक्य पर्वत निर्माण से पूर्व शैरचना है जिसके समथकाकीन पर्वत पश्चात विभाक्य की उत्पत्ति हुई मानी जाती है।

N यह निम्न वायु हाव का क्षेत्र है जिसके स्वानंतरण एवं विचकन से मौसमी परिवर्तन देखे जाते हैं।

O क्षेत्र विशेष में फसल उत्पादन हेतु निश्चित काल में हडि की जाती है ताकि शीघ्र ही उत्पादन किया जा सके।

प्रश्न  
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

2 A

भारत कोयला भण्डार की दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र है जो विश्व में उत्पादन की दृष्टि से तीसरे स्थान पर है।

भारत में कोयला उत्पादित राज्य मुख्यतः दिलीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल हैं।

- दिलीसगढ़ - कोरबा खदान, हर्ना, बैजडीला
- उड़ीसा - बस्तर क्षेत्र

पूर्वी पठार का छोटा नागपुर का पठार -

- झारखण्ड - सिंहभूम जिला

- कर्नाटक - शिबोलागाँव आदि प्रमुख कोयला

~~उत्पादित क्षेत्र हैं। इन संचित कोयले का विद्युत, उद्योग में उपयोग किया जाता है।~~

B

पेट्रोलियम एक अत्यंत आवश्यक वस्तु है। भारत में पेट्रोलियम के भण्डार सीमित व्यवस्था में उपलब्ध हैं।

- असम का डिब्रुगढ़ क्षेत्र प्रमुख पेट्रोलियम क्षेत्र है

- मुंबई का बामबे डीप

इसके अलावा पूर्वी भारत एवं दक्षिण पूर्वी भारत में भी पेट्रोलियम संयंत्र के क्षेत्र मौजूद हैं जहां खनन कार्य जारी रहता है।

- भारत प्रमुख पेट्रोलियम निर्यात देशों जैसे अमेरिका, इजराइल आदि से पेट्रोल का आयात करता है।

C

उवाकापुरी एक स्थलीय शक्ति / संहार है जो वृत्त  
गैरमा या नाका के अंतः परतो से हलार प्रसुर्य  
के बाह निगति होता है। उवाकापुरी द्वारा कई  
स्थलाकृतियां का निर्माण होता है जिसे  
अन्तर्गत - लैपोलिथ, लैकोलिथ,

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

मृदा एक अहम प्राकृतिक ससाधन है जो वन, कृषि विस्तार एवं वृद्धि हेतु सहायक है। इसा दृष्टि से मृदा अपरदन, निम्नीकरण, क्षरण जैसी समस्याएं सामने आती है। इनका निवारण आवश्यक है।

- मृदा का संरक्षण अति आवश्यक है।
- वृक्षारोपण करना।
- कृषि की विभिन्न प्रकृतियां - कठोर कृषि, भू-परिष्कार
- जैविक खाद प्रयोग एवं रसायन, उर्वरक सीमित प्रयोग
- अस्थायी कृषि पर नियंत्रण जैति - स्थानान्तरित कृषि
- अनियंत्रित पशुचारण पर रोक।
- खेती के आसपास भेदों का निर्माण करना
- शून्य उच्च स्तरी को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्षतः समुदाय आधारित सहयोग अपनाना।

उद्योगों के संयोजन एवं प्रक्रिया के दौरान कई प्रकार की गतिविधियां लैंगिक होती रहती हैं। इसमें उनकी कुछ अव्यवस्थाएं एवं पूर्ववर्ती आवश्यकताएं होती हैं जो निम्न हैं :

- 1) पूर्ववर्ती आवश्यकता :
  - उच्च मान्यता का समुचित प्राप्ति
  - उपकरणों संबंधी आवश्यकताएं
  - क्षमिक प्रशिक्षण व अन्य।

- 2) अग्रवर्ती आवश्यकता :
  - निमित्त उत्पाद की समुचित पैकेजिंग व भावकीकरण।

परिग्रहण व्यवस्था सुगम ताकि उत्पाद नुकसान न हो।

निष्कर्षतः सरकारी नीतियों व आधुनिक प्रयासों से उद्योगों की तमाम आवश्यकताएं पूरी हो सकती हैं।

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कृषि, पौधों, पशु संबंधी कृषि माल की विभिन्न उद्योगों से उत्पाद निर्मित कर उद्योगोपताओं तक पहुंच सुनिश्चित करना ही <u>स्वायत्त प्रसंग</u> है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• भारत में यह उद्योग <u>पान्चव</u> सबसे बड़ा उद्योग है जो 13 मिलियन लोगों को प्रत्यक्ष एवं 33 मिलियन लोगों को अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार उपकृत कर रहा है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>उपयोगिता</u> : • दूध, दही, मत्स्य जैसे उत्पाद उत्तरजीविता
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• महिला सशक्तिकरण में सहयोगी
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• नियति का 14% एवं जीडीपी में 12% का योगदान
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• कृषकों की आय में वृद्धि में सहायक
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• ग्रामीण रोजगार वृद्धि एवं कुपोषण में कमी।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>निष्कर्षतः</u> सम्पदा योजना, भेगा पूछ पार्क जैसे प्रयासों
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत में लगभग 60 से 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है ऐसी स्थिति में कृषि को <u>आय</u> का अहम साधन एवं सफल बनाने हेतु प्रयास किये जाने चाहिए परन्तु कुछ <u>समस्याएं</u> उत्पन्न हैं जो निम्न हैं:
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1) कृषि योग्य सिंचित क्षेत्र की कमी।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	2) कृषकों के पास आधुनिक संकेतों का अभाव।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	3) भ्रान्त सूत्र अनिश्चितता एवं जलवायु परिवर्तन।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	4) मृदा की सही पहचान न होने से उत्पादन में कमी।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	5) महत्वपूर्ण विद्युत् किटों से कृषक शोषण
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	6) सिंचाई की उन्नत प्रणालियों का अभाव व जागरूकता ↓
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>निष्कर्षतः</u> कृषि को सफल बनाने हेतु इसे आधुनिक एवं उत्पादित कृषि उत्पाद जाने की जरूरत है।



प्रश्न  
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

I  
कौटिल्य द्वारा उद्योग भारत का एक महम मशीनीकृत  
उद्योग है। भारत कौटिल्य द्वारा रबनन एवं उत्पादन में  
विश्व में महम राष्ट्र है। जहाँ मध्य प्रदेश के पूर्वी  
क्षेत्र, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल आदि राज्य  
कौटिल्य द्वारा रबनन राज्य है।

J  
पृथ्वी की आंतरिक संरचना को समझने एवं जानने का  
कोई सीधा मार्ग नहीं है। इसलिए घनत्व, तापमान  
आदि मापदंडों से आंतरिक संरचना की जानकारी  
शामिल होती है इसके अन्तर्गत - कोड, क्लर एवं  
ऊपरी सतह शामिल है। कोड एक तरत भंगम  
युक्त स्थान है जहाँ से भंगम ऊपरी सतहों की  
ओर आता है।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

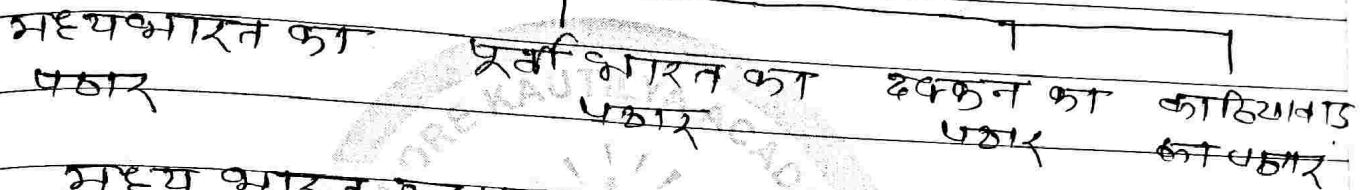
<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

कृषि को साफ़क बनाने हेतु सिंचाई एक महत्वपूर्ण कार्य है। भारत में अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई के माध्यम से खेती की जाती है व इसमें कई प्रकार के सिंचाई प्रणाली को अपनाया जाता है।

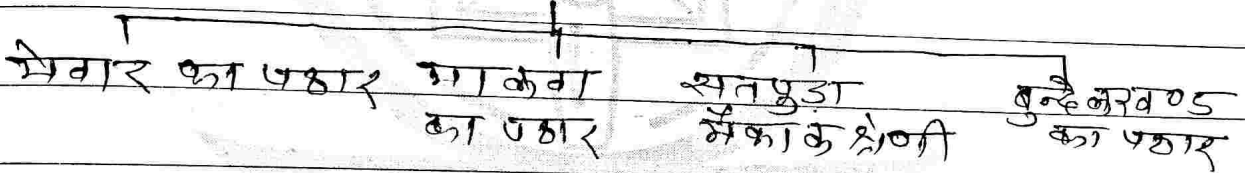
- 1) कृत्वारा सिंचाई: खेतों में पाइपों के छेदों से फव्वारों के माध्यम से सिंचाई।
- 2) टपकन सिंचाई: नियंत्रित तरीके से पाइपों से एक-एक छेद से सिंचाई परन्तु ऊर्जा एकत्रीकरण, पाइप कार्य के लागू।
- 3) उप-सतही सिंचाई - सतह के नीचे पाइपों के माध्यम से सिंचाई, मृदा में नमी बनी रहती है।
- 4) चक्रीय सिंचाई: खेतों में चक्रीय पंपों के माध्यम से पानी दूर क्षेत्रों तक पहुँचा सुनिश्चित।

प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र भारत का महत्वपूर्णतम क्षेत्र है जो विन्ध्यनक्षेत्री के कारण उत्तर के विशाल मैदान से विभाजित होना है। यह क्षेत्र विभिन्न भू-व्यापक क्षेत्रों में विभाजित है।

प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र



• मध्य भारत का पठार : प्रायद्वीपीय पठार का यह क्षेत्र ठाने कु उच्चांगत व भू-व्यापक नियंत्रण से युक्त है। इसके अन्तर्गत



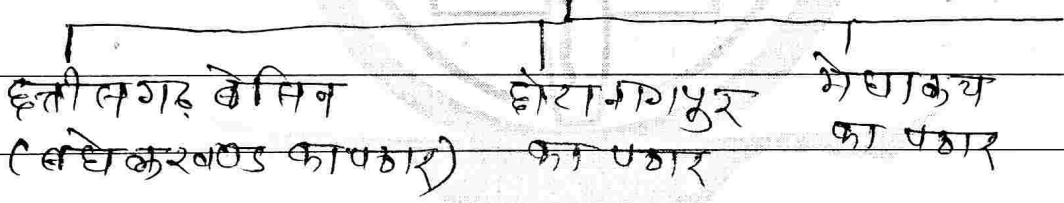
मेवार का पठार मुख्यतः राजस्थान, गुजरात में विस्तारित है जो विन्ध्यनक्षेत्री के भाऊवा पठार से विभाजित करती है। वही भाऊवा का पठार बसाल्ट चट्टान से निर्मित संरचना है जहाँ मुख्यतः काँची मिट्टी का विकास हुआ है। जिससे कपास उत्पादन में महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

भाऊवा के पठार की जलवायु सम है एवं मुख्यतः गेहूँ, ज्वार जैसी फसलों का उत्पादन होता है। मध्य प्रदेश में इन्दौर, नागदा, क्षत्रिया आदि प्रमुख शहरों।

क्षेत्र हैं।

सतपुड़ा मैदान क्षेत्री एक प्रमुख वन सिपहा युक्त क्षेत्र है जहाँ सबसे ऊँची चोटी धूपगढ़ - महादेव पर्वत में सतपुड़ा पर्वत श्रेणी में उपस्थित है। बुन्देलखण्ड का पठार श्रेनावर व नीस चट्टान से निर्मित स्थलाकृति है जहाँ काक-पीली मिट्टी का विकास हुआ है। इस पठार के पूर्व में होरा नागपुर का पठार अवस्थित है।

पूर्वीभारत का पठार है स्वनिज संसाधन संपन्न एवं जैवविविधता से युक्त इस पठार को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है -



- बुधेकरवण्ड का पठार मुख्यतः हत्तीसगढ़, पूर्वी मण्डल व उड़ीसा में विस्तारित है यह स्वनिज संसाधन संपन्न क्षेत्र है।

होरा नागपुर का पठार हत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, में विस्तारित है। इस पठार की सबसे बड़ी नदी दामोदर है जो इस पठार से प्रवाहित होकर पश्चिम बंगाल से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अलावा स्वर्णरेखा नदी के अपवाह क्षेत्र का संबंध भी इसी पठार से है।

प्रश्न संख्या

इस पठार को रांची का पठार, हजारीबाग का पठार भी कहते हैं। यहां जननिश्चिन्ता होने के बावजूद उद्योगों का विकास नहीं हुआ है एवं यह एक पिछड़ा इलाका है।

भेद्यक्य का पठार मुख्यतः गारो, शाली एवं जयंतिया पहाड़िया से युक्त है जहां शाली पहाड़ी में चीयप्रेजी स्थान पर मासिमराय सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है।

दक्कन ट्रेप मुख्यतः महाराष्ट्र में अवस्थित है जहां सतमाळा, अजन्ता, काकाघाट एवं हरिशचन्द्र स्तूपियां अवस्थित हैं। हरिशचन्द्र की सबसे ऊंची चोटी कुल्लुबाई है।

• कर्नाटक का पठार मुख्यतः मलनाड व निम्न मैदान में विभाजित है जहां काकाबुदान सबसे ऊंची चोटी है।

• दण्डकारण्य का पठार - मुख्यतः उड़ीसा, झारखण्ड में विस्तारित है। इन्द्रायनी नदी के अपवाह क्षेत्र का संबंध इसी पठार से है। रिन, तांवा, कौह अयस्क संबंधित धातु यहां पाई जाती है परन्तु यह एक सूखा ग्रस्त क्षेत्र है जहां कृषि संबंधित क्रियाएं सीमित हैं।

निष्कर्षतः प्रायद्वीपीय पठार श्वनिज, जलविद्युत, उद्योगों की दृष्टि से संपन्न है क्षेत्र है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वर्ष 2011 की जनगणना कि अनुसार भारत विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला सातवां राष्ट्र है जहाँ लगभग 130 मिलियन जनसंख्या निवास करती है। ऐसे में बढ़ती जनसंख्या भारत के समाजों पर अत्यधिक दबाव बनाने के साथ ही कई समस्याओं का भी एक प्रमुख कारक है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण हेतु कई प्रयास किये जाते रहे हैं एवं किए जा रहे हैं। ऐसे स्थिरीकरण मानकों ने जनसंख्या में अस्थायी स्थिरीकरण एवं असमानता को पैदा किया है। इनके निम्न बिन्दुओं के तहत समझा जा सकता है:
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1) भारत की जनन दर को 2.1 के स्तर पर कम करने इससे प्रति दंपति केवल 2 बच्चों से जनसंख्या एवं पारिवारिक दबाव कम होगा।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	2) जनसंख्या नियंत्रण नीति के तहत दो बच्चों वाले दंपति को शासकीय सेवा का लाभ न देना।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	3) गर्भपात को शासकीय। कानूनी मंजूरी से अच्युत स्तन व जनसंख्या नियंत्रण में सहायता मिलेगी।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इसी प्रक्रिया में बढ़ती जनसंख्या को रोकने हेतु सरकार द्वारा भी कई प्रयास एवं नीतियों का क्रियान्वयन किया जा रहा है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	

- 1) राष्ट्रीय जनसंख्या नीति २००० में किगार्वित
- प्रजनन दर २.० तक लेकर आना।
  - प्रजायत, ग्राम सभा के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता में शक्ति करना।
  - शिशु मृत्यु दर में कमी करना।
  - सवजात शिशु मृत्यु दर में कमी करना।
  - स्वास्थ्य सुविधा विस्तार एवं प्रजनन सुविधा में विस्तार के साथ जनसंख्या संकुचन का प्रयास करना।

इस राष्ट्रीय नीति के अलावा माध्यमिक स्तरों की जनसंख्या नियंत्रण नीति, २००१ का अनुसरण किया जा रहा है।

प्रश्न  
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	विशाक मैदानों में जलोढ़ भूछा से निर्मित भूमि को सम्प्राप मैदान कहा जाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	- यह कृषि हेतु उपयुक्त एवं उपजाऊ होते हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	B उत्तर भारत में शीत ऋतु के समय चलेने वाली झुल्ला पर्वतों को लू कहा जाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	यह मुख्यतः उत्तर एवं उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में प्रवाहित होती है - जैसे - दिल्ली, राजस्थान आदि।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	C कौन्डेरा एक ज्वालामुखी से निर्मित स्थलभूकृति है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	D समुद्री क्षेत्र में प्रवाल किनारों के क्षरण अथवा उनके रंग परिवर्तन को विरंजन कहा जाता है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	कारण: जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रदूषण आदि।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	E रिफर घाटी एवं विशाल क्षेत्रीय पर्वत व पठारों के महत्व स्थित सीकरा क्षेत्र है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	F प्रशांत महासागर का अग्नि वलय - स्ट्रॉन्गेकी ज्वालामुखी को कहा जाता है जो एक एक प्रसृत ज्वालामुखी है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	



प्रश्न संख्या

G

H

I

J

K

L

वर्तमान के साथ-साथ जल की जरूरतों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्राकृतिक ससाधन उपयोग एवं इसका प्रबंधन ही सारणीय है।

- यह सतत विकास लक्ष्यों का अहम घटक है।

भूदा अपरदन, निष्पीकण एवं क्षरण की समस्या से ग्रसित भूदा ही समस्याग्रस्त भूदा है।

जैसे - चमत्क धारी भूदा, नर्महा धारी भूदा, हिमाकयक्षेत्रीय भूदा आदि।

1986 में यू.एन. शास्त्र में मानवीय वैज्ञानिक अनुप्रयोग के दौरान धरित परमाणु जल है।

- लगभग 1.5 कारक लोग प्रभावित हुए एवं धारों में गलती

- प्रमुख कारक - मानव कापरवाही

जमी सिंचाई प्रणाली जो सीमित जल प्रयोग के साथ अधिकतम कृषि उत्पादन एवं भूदा संतुलन में सहायक है।

उदा - फवारा सिंचाई प्रणाली, स्प्रिंकल, उपसतही आदि।



प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/> M	आग्नीय, कवणीय जल से युक्त भूत दारी क्षेत्र	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/> A
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/> N	गंगासागर के द्वारा प्रवाहित व बहाव से तट के पास स्थित किया गया निक्षेप है जिसमें कवणीय मृदा एवं महासागरीय अपशिष्ट शामिल हैं।	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/> O		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/> P	सरहद - भारत पाकिस्तान के मध्य अवस्थित एक विवादित क्षेत्र है जहाँ सदैव सैन्य उपस्थिति रहती है। यह क्षेत्र - हिमालयीय <sup>मध्य</sup> पूर्वी क्षेत्र में स्थित है।	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/> Q		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>

प्रश्न  
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न  
संख्या

2 C

D

पारिस्थितिकी तंत्र मानव व प्रकृति के मध्य एक अहम  
संतुलनकारी तंत्र है जो मानव की तमाम आवश्यकताओं  
की पूर्ति करता है। परन्तु मानव की आक्रांक्षाओं व  
अंधाधुन होटन से इस पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जो  
निम्नलिखित हैं :

- 1) जैवविविधता का व्यापक क्षय
- 2) जल सफर एवं प्रदूषण
- 3) वायु प्रदूषण
- 4) खाद्य श्रृंखला पर विपरीत प्रभाव
- 5) जलवायु परिवर्तन समस्या
- 6) प्रवाक विरंजन एवं समुद्री प्रदूषण

निष्कर्ष कि: पारिस्थितिकी संरक्षण व संवर्धन अति  
आवश्यक है।

- आपदाग्रस्त जनजातियों से तात्पर्य ऐसी जनजातों जो  
 आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास से अन्य जनजातों  
 की तुलना में कमजोर हो गईं जो विकृति का संकेत देकर  
 रही हैं। भारत में पीपीटीजी समूह के अन्तर्गत लगभग  
 75 जनजातों को शामिल किया गया है।  
 इसके अन्तर्गत महाराष्ट्र में तीन - वेंगा, सहारिया  
 एवं भारिया आपदाग्रस्त जनजातियाँ हैं जो खम्ब  
 की मुख्य धारा में शामिल होने से काफी दूर हैं।  
 - भारत में पूर्वी क्षेत्र की जनजातों, अण्डमाननिकोबार  
 द्वीप समूह, लक्षद्वीप आदि क्षेत्र की जनजातों को भी  
 में शामिल है। सरकार द्वारा इनके उत्थान व संवर्धन  
 हेतु कई प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
 (Mains Answer Sheet)

D

गाँव व्यापृति श्रैखला से तात्पर्य - उत्पादक से उपभोक्ता तक उत्पाद की समुचित व सफ़ेक पहुँच जिससे उपभोक्ता सेतुसि की सीमा निहित है।

इस श्रैखला के अन्तर्गत कई उद्योग एवं सेवा प्रदायक उद्योग भी शामिल हैं। इस श्रैखला का संबंधन निम्न बिन्दुओं में निहित है :

- 1) परिवहन साधन व मागि सुगमता हो
- 2) ईकेजिंग, भण्डारण, मानकीकरण का उच्च स्तर हो।
- 3) व्यापृति तकनीक का वस्तेमात्र
- 4) उत्पादक उचित भाष एवं कृषक सेतुसि हो
- 5) व्यापृति नीति व कर व्यवस्था लचीली हो।

H

श्रव प्रवासन से तात्पर्य - सामाजिक सांस्कृतिक व्यापृति व्यापृति से एक वर्गी का क्षेत्र से प्रवासन कर दूसरे क्षेत्र में निवास करना। ग्राम से नगर की ओर प्रवास का प्र कारण निम्न लिखित हैं :

- 1) शैक्षणिक सुनिश्चितता एवं व्यापृति जीवन
- 2) कृषि अनिश्चितता एवं हवायों शक्ति
- 3) सांस्कृतिक - सामाजिक स्तुकापन
- 4) शिक्षा, स्वास्थ्य का बेहतर स्तर
- 5) व्यक्तिगत विकास के अनेक अवसर मौजूद
- 6) व्यापृति का छहम कारक आदि अनेक कारण हैं जिसके कारण लोग ग्राम से शहर की ओर प्रवास करते हैं।

I भारत में मानसून की शुरुआत मुख्यतः जनवरी प्रथम सप्ताह में भारी जाती है। जिसके अन्तर्गत जनवरी प्रथम आर्द्राक्षी जेट पवन के दक्षिण की ओर विस्थापन से दक्षिण में निम्न वायुदाब का क्षेत्र स्थापित हो जाता है। इसी प्रक्रिया में भारत में मानसून की शुरुआत होती है एवं मानसून पवने के एक कि तरह पर

J बाढ़ एक प्राकृतिक एवं कुछ सीमा तक अनवीच आपदा है जब सेज बढ़ाव से नदी का जल सीमाएं काँचकर स्थलीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है तो उसे बाढ़ कहते हैं।  
भारत में बाढ़ प्रसिद्ध क्षेत्र : उत्तर पूर्वी भारत (उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार) , दक्षिण पूर्वी क्षेत्र आदि।

- समस्या : जनजीवन अस्तव्यस्त, जनश्रवहानि, ध्वंसरचनात्मक हानि, कृषि हानि आदि।
- समाधान के उपाय : बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में बाँधों का निर्माण
- आपदा से पूर्व ही समुचित प्रयास जैसे - क्षेत्र रबाकी करना
  - जनसंख्या वितरण में स्थान देना
  - बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता दिव्याना।

आदि अनेक सरकारी नीतियों व समुदाय सहयोग से बाढ़ नियंत्रण संभव है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/> K	<p>टिकाऊ विकास एवं धारणीय एवं सतत विकास की संकल्पना है जिससे वर्तमान के साथ भावी पीढ़ी आवश्यकता का ध्यान रखा जाता है। इस हेतु ध्यान निम्नकिरित है :-</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>1) धारणीय कृषि एवं जैविक कृषि को बढ़ावा देना।</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>2) ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों एवं अल्पमूल्य वसाधनों का अधिक उपयोग करना। (जैले - सौर, जैव, सफ़ाई ऊर्जा)</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>3) सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास 2030 तक</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>4) सिविकता में जैविक कृषि से (जैविक राइसी) का दर्जा 5) जीरो बजट प्राकृतिक खेती, कुशल सिंचाई प्रणाली</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>निष्कर्षतः सतत विकास हेतु सामुदायिक भागीदारी एवं सफल नीति क्रियान्वयन अति आवश्यक हैं।</p>
<input type="checkbox"/> L	<p>झरावकी पहाड़ियों का विस्तार उत्तर में दिल्ली से लेकर उत्तर पश्चिम में राजस्थान तक विस्तारित है</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>यह राजस्थान बांगर प्रदेश को दक्षिण में भाकरा व भेमार के पठार से विभाजित करता है।</p>
<input type="checkbox"/> <input type="checkbox"/>	<p>झरावकी पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी मुकुशिर (1322 मी) है यह हिमालयीन श्रृंखला के अन्तर्गत है जो उत्तर पर अवस्थित है जिससे इस क्षेत्र में वर्षा का अभाव पाया जाता है। यहाँ से निकलने वाली बूढ़ी नदी राजस्थान से होते हुए रवभात की रबाड़ी में गिर जाती है। इन पहाड़ियों के पूर्व में विन्ध्योच्च पहाड़ियां हैं।</p>

स्वतंत्रता से पूर्व उद्योगों का सत किया था। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा औद्योगिक नीतियों के क्रियान्वयन ने उद्योगों की स्थिति को काफी सीमा तक सुधारा है परन्तु वैश्वीकरण क्षेत्र पर एवं छेदेबू माँग के आधार पर यह औद्योगिक विकास काफी मंद एवं सीमित है। इस मंद औद्योगिक विकास के अन्तर्गत कच्चा भाक की पर्याप्त आपूर्ति के बावजूद कृषि आधारित, वनोपज, खनिज आधारित उद्योग अपनी सफलता हासिल नहीं कर पा रहे हैं। इस मंद औद्योगिक विकास के कारण निम्नलिखित हैं :-

- 1) कच्चीनी, कृषि औद्योगिक नीति का अभाव।
- 2) उद्योगों हेतु उचित वातावरण एवं क्षेत्रों का अभाव।
- 3) उच्चत तकनीक एवं संसाधनों का अभाव।
- 4) कुशल प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी एवं भौज श्रमिकों की अनुभवहीनता।
- 5) परिवहन, अवसंरचनात्मक कमी जिनसे उत्पाद एवं कच्चे भाकों का नुकसान अधिक होता है।
- 6) प्रसंस्करण तकनीक एवं वेंतानिकता की कमी।
- 7) उद्योग सँवर्द्धन इच्छाशक्ति का अभाव।
- 8) सरकारी नीतियों, योजनाओं के क्रियान्वयन में अभाव।
- 9) कर प्रणाली जटिलता, निवेश सँवंधी कानून प्रणाली एवं सँवंधी समस्याएँ।



मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
 (Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

इन तमाम कारणों से उद्योगों की स्थिति व.

समस्याओं को समझा जा सकता है परन्तु उद्योग संतर्कित एवं औद्योगिक विकास में वृद्धि हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए हैं जो निम्न हैं :-

1) औद्योगिक नीतियों में संशोधन करना।

2) उद्योग संवर्धन नीति, 1985

3) डी हार्डि कीपी परिवर्तन डीपीआईआईटी नाम से क्षेत्र विस्तार करना।

4) निवेश प्रोत्साहन हेतु कर संबंधी जरूरतों को कम किया गया है।

5) ग्रुप योजना - जिनके तहत छोटे, लघु, मध्यम क्षेत्रीय उद्योगों को कृषि प्रधान किया जाएगा।

6) स्टार्टअप योजना - नवीन उद्योगों के संरक्षण व शुरूआत हेतु कृषि प्रधान किया जाएगा।

स्टैंडर्ड ड्राप योजना - महिला उद्योगियों को प्रोत्साहन के साथ अनुसूचित जाति, जनजाति को भी सहयोग

7) संघानमंत्री कृषि संपदा योजना - स्वायत्त संस्थाओं को प्रोत्साहन एवं संवर्धन हेतु।

8) सूक्ष्म, लघु, कुटीर उद्योगों की क्षेत्रीयों में परिवर्तन किया गया।

9) इन तमाम उपायों के अलावा भी कई प्रयास किए जा सकते हैं -

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्र. सं.

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	इन तमाम कारणों से उद्योगों की स्थिति व समस्याओं को समझा जा सकता है परन्तु उद्योग संतर्कन एवं औद्योगिक विकास में शक्ति हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए हैं जो निम्न हैं :
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1) <u>औद्योगिक नीतियों में संशोधन करना</u>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	2) <u>उद्योग संवर्धन नीति, 1985</u>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	3) <u>डी हार्डि कीपी परिवर्तन डीपीआईआईटी नाम से क्षेत्र विस्तार करना।</u>
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	4) निवेश प्रोत्साहन हेतु कर संबंधी जरूरतों को कम किया गया है।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	5) <u>मुद्रा योजना</u> - जितने तेज दौरे, उद्योग मध्यम क्षेत्री उद्योगों को करण प्रधान किया जाएगा।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	6) <u>स्टार्ट अप योजना</u> - नवीन उद्योगों के संरक्षण व शुरुआत हेतु करण प्रधान किया जाएगा।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<u>स्टैंड अप योजना</u> - महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन के साथ अनुसूचित जाति, जनजाति को भी सहयोग
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	7) <u>प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना</u> - खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को प्रोत्साहन एवं संवर्धन हेतु।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	8) <u>सूक्ष्म, कृषि, कुटीर उद्योगों की क्षेत्रों में परिवर्तन</u> किया गया।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	9) इन तमाम उपायों के अलावा भी कई प्रयास किए जा सकते हैं -
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	



# इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान



## मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

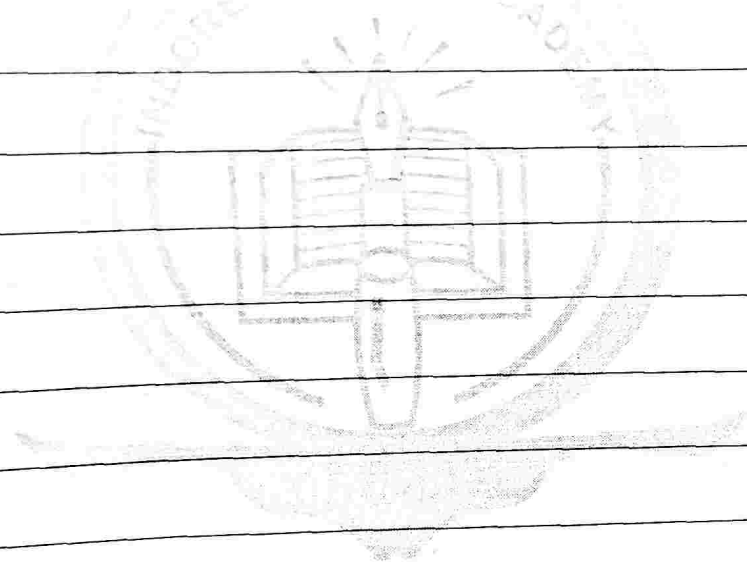
न  
था

1) महिलाओं में उद्यमिता प्रसार हेतु ग्रामीण क्षेत्रों की लक्ष्यगणित कक्षाएं।

2) उन्नत तकनीक एवं औद्योगिक वातावरण प्रदान किया जाना।

3) मूलशक्ति एवं जमा रकमों की प्रवृत्ति पर ध्यान देना।

निष्कर्षतः उद्योगों के संवर्धन व विकास हेतु एक नई औद्योगिक नीति की अपेक्षा है।



मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

3 C

सौर परंपरागत ऊर्जा स्रोत या नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत से तात्पर्य जिसे संसाधन जो एक बार उपयोग होने के पश्चात पुनः संचरण कर उपयोग में लाए जा सकते हैं। ऐसे ऊर्जा कि स्रोत जो वर्तमान में क्षीमित मात्रा में प्रकृति में मौजूद हैं। इन ऊर्जा स्रोतों में - सौर ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जल ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि हैं।

सौर ऊर्जा के अन्तर्गत सूर्य एक क्षीमित ऊर्जा स्रोत है जिससे क्षीमित मात्रा में दिन के समय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। पुराने समय में सोकर कुकर जैसे यंत्र उपयोग में लाए जाते थे जो एक शुरुआती कदम था परन्तु वर्तमान में सौर सेल, सौर बॅररी, सौर सैलिंग आदि उपकरण सामने हैं जो उन्नत तकनीक से युक्त होने के साथ ही सतत विकास से भी जुड़े हुए हैं।

सौर सेल - के माध्यम से सूर्य प्राप्त ऊर्जा को प्राप्त कर बिजली उत्पादन संभव है यह विद्युत की व्यापक बचत एवं कोपके पर निर्भरता का बेहतर विकल्प है इसी दिशा में -

ज्वारीय ऊर्जा - सागरीय जल के प्रवाह व बल से निर्मित ऊर्जा है जिसके अन्तर्गत सैलिंग में लगी रवार्दन पर सागरीय तरंगों के प्रसार से बि ऊर्जा पैदा की जाती है। इसी प्रकार पवन चक्कियों के माध्यम से पवन ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

ने इस लक्ष्य पवन के बहाव वाले क्षेत्रों में किया जा सकता है।

इन तमाम नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की वर्तमान आवश्यकता को निम्न बिंदुओं में बहुत समझ सकते हैं:

- 1) परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की सीमितता एवं कठोरता उनके स्रोतों के साथ कमी की समस्या।
- 2) सतत विकास लक्ष्यों के अनुपाकन में सहयोगी।
- 3) प्रदूषण नियंत्रण में सहायक।
- 4) परंपरागत स्रोतों को केंद्र विकास एवं तनाव से बचाने एवं विकास आधारित इतिहास के अनुपाकन हेतु।
- 5) निष्कर्षित: नवीकरणीय स्रोत को व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय से केन्द्र स्तरीय स्तर तक बढ़ाया गया जाना चाहिए ताकि सीमित स्रोतों पर दबाव कम हो सके।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	भूकंप एक प्राकृतिक आपदा घटना है जो पृथ्वी के अन्तर्गत बलों के कारण एकत्रित विसरण एवं शक्त के परिणामस्वरूप उत्पन्न बल का कारण है। भारत में भूकंप सेवेदनशील क्षेत्र मुख्यतः उत्तर पूर्वी हिमाच्छिदनी भारत, पूर्वी भारत आदि हैं।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	परन्तु वर्तमान में भूकंप की अनिश्चिन्ता तथा क्षेत्रों में मौजूद है। इस अनिश्चिन्ता एवं उत्पत्ति के कारण निम्नलिखित हैं :
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	1) <u>मानवीय कारण</u> ;
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• संवेदनशील क्षेत्रों में बांध, ध्वंसरचनात्मक गतिविधि का वि अपनाना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• इन क्षेत्रों में व्यापक मात्रा में तेजा व गैस अन्वेषण का कार्य करना।
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	2) <u>प्राकृतिक कारण</u> ;
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• एकत्रित विवर्तनीय संकुचन का कारण
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• ऊर्जा संचयन का तनाव
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• ऊर्जा का मुक्त होना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• हिमालय की तिफटना
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	• फॉल्ट एवं कगार क्षेत्र
<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	वर्ष 2001 में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में आये भूकंप से लगभग 4 से 5000 लोगों की मृत्यु हो गई थी। वस्तुतः इसका मुख्य कारण

प्रश्न  
संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्राकृतिक ही था। इस व्यापक भूकंप से पूर्व भारत  
में आपदा नियंत्रण हेतु किसी राष्ट्रीय नीति का  
अभाव था। इस प्राकृतिक आपदा के पश्चात  
ही 2005 में आपदा नियंत्रण नीति का गठन  
किया गया जिसके तहत राज्य एवं जिला  
आपदा नीति एवं आयोगों का गठन किया गया।

